शिष्य श्रद्धा, समर्पण और आत्म जागरण का महापर्व

शिष्य का हृदय जब श्रद्धा से भर जाता है, तब गुरु की कृपा सहज रूप से प्रवाहित होने लगती है।

गुरु कृपा कोई चमत्कार नहीं, बल्कि चेतना का जागरण है। जिस प्रकार सूर्य सदैव प्रकाश देता है, किन्तु बंद खिड़की वाले घर में प्रकाश नहीं पहुंचता, उसी प्रकार गुरु की कृपा सदैव उपलब्ध है। गुरु को श्रद्धा और विनम्रता से हृदय में सदैव धारण करना, शिष्य का अहोभाग्य है।

इस धरा का सबसे अधिक पवित्र, दिव्य और आत्मिक सम्बन्ध है - गुरु और शिष्य का सम्बन्ध। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध मात्र ज्ञान के आदान-प्रदान का सम्बन्ध नहीं है, **गुरु-शिष्य का सम्बन्ध तो चेतना के जागरण, आत्मा के विकास और जीवन के अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित करने का सम्बन्ध है। माता-पिता शरीर को जन्म देते हैं, किन्तु गुरु मनुष्य के भीतर छिपे हुए दिव्य पुरुष का जन्म कराते हैं।**

संसार में मनुष्य को धन देने वाले अनेक मिल सकते हैं, ज्ञान देने वाले भी मिल सकते हैं, किन्तु आत्मा को दिशा प्रदान करने वाले सद्गुरु का मिलना दुर्लभ होता है। इसी कारण सद्गुरुदेव को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूजनीय माना गया है।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध को पूर्णता प्रदान करने वाला पर्व गुरु पूर्णिमा है। गुरु पूर्णिमा केवल पर्व नहीं, बल्कि जीवन में प्रकाश देने वाले गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है। यह वह दिन है जब शिष्य अपने गुरु के प्रति श्रद्धा, सेवा, समर्पण और प्रेम व्यक्त करता है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि जीवन में चाहे कितना भी ज्ञान, पद, प्रतिष्ठा और सामर्थ्य प्राप्त हो जाए, यदि मार्गदर्शन करने वाला गुरु न हो तो मनुष्य भीतर से अधूरा रह जाता है।

गुरु का वास्तविक अर्थ केवल अध्यापक नहीं है। 'गु' का अर्थ अंधकार और 'रु' का अर्थ प्रकाश कहा गया है। जो अज्ञानरूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करे वही गुरु है। संसार में अनेक लोग जानकारी देते हैं, परन्तु **गुरु वह होता है जो जीवन का रहस्य समझाता है। गुरु केवल पुस्तक का ज्ञान नहीं देता, वह आत्मा की दिशा बदल देता है।** वह व्यक्ति के भीतर सोई हुई शक्ति को जाग्रत करता है। वह केवल यह नहीं बताता कि क्या करना है, बल्कि यह भी सिखाता है कि क्यों करना है और किस भावना से करना है।

जीवन की अनजानी राह

मनुष्य का जीवन अनेक भ्रमों, भय, इच्छाओं और संघर्षों से भरा होता है। कभी वह मोह में फंस जाता है, कभी क्रोध में, कभी निराशा में और कभी अहंकार में। ऐसे समय गुरु जीवन के पथप्रदर्शक बनते हैं। जिस प्रकार घने अंधकार में दीपक मार्ग दिखाता है, उसी प्रकार गुरु जीवन की कठिन परिस्थितियों में सही दिशा प्रदान करते हैं। **गुरु केवल उपदेश नहीं देते है, वे अपने वचनों से, नेत्रों से, मौन से अपनी तपस्या के बल से शिष्य का मार्ग प्रशस्त करते है।**

महाभारत में अर्जुन जैसे महान योद्धा भी युद्धभूमि में

जीवन से निकली जीवन की बातें
आप इन बातों पर विचार करें

- सब कुछ गलत हो तो भी खुद पर विश्वास रखिए। ऐसे ही आगे बढ़ सकेंगे... चीजों को समझना जरूरी है, उनसे डरना नहीं।
- जिन्दगी में सफल होने के लिए न तो यह जानने में ज्यादा उत्सुक हों कि दूसरे क्या सोच रहे हैं, न ही चीजों में रुचि दिखाएं लेकिन नए आइडिया या किसी नए विचार की खोज करिए। कुछ नया करने से ही आगे बढ़ने का रास्ता बनेगा। प्रसिद्धि मिलेगी।
- दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं जिससे डरने की जरूरत है। फिलहाल जरूरत सिर्फ चीजों को सही तरीके से समझने की है। इससे डर कम होगा।
- आगे बढ़ने का रास्ता न ही आसान होता है और न छोटा, पर नतीजे अच्छे मिलते हैं।
- उस वक्त तक डरने की कोई जरूरत नहीं है जब तक आप जानते हैं कि जो कर रहे हैं वह बिल्कुल सही है। उससे किसी को नुकसान नहीं पहुंच रहा है।
- उन लोगों में से एक बनिए जिन्हें कर्म में ही सुन्दरता दिखती है।
- दुनिया में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं जो सिर्फ गलतियां निकालने की कोशिश करते हैं, न कि सत्य की तलाश करते हैं। ऐसा हर जगह है।
- कम ही लोग इस बात की तरफ ध्यान देते हैं कि क्या हो चुका है, जबकि ज्यादातर लोगों की रुचि इस बात में रहती है कि क्या बाकी रह गया है?
- किसी भी व्यक्ति के लिए जीवन आसान नहीं है तो फिर क्या किया जाए? इससे बाहर निकलने का एक ही रास्ता है, खुद पर विश्वास रखिए। हर व्यक्ति को सोचना चाहिए कि भगवान ने उन्हें कोई न कोई खास तोहफा दिया है और उस तोहफे को बनाए रखना है।

मोह और भ्रम से भर गये थे। उनके हाथ कांपने लगे, मन विचलित हो गया और उन्होंने अपने शस्त्र डाल दिये। उस समय जगद्गुरु श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया। गुरु ज्ञान को प्राप्त कर अर्जुन पुनः धर्मयुद्ध को लड़ने के लिये तैयार हुए।

सद्गुरु मनुष्य की सुप्त चेतना को जाग्रत करते है

सद्गुरु केवल शिक्षा नहीं देता, वह शिष्य को स्वयं से मिलाते है। संसार मनुष्य को बाहर की वस्तुओं में उलझाता है, जबकि सद्गुरु भीतर की यात्रा कराते है। संसार कहता है कि सुख, आनन्द बाहर है, गुरु कहता है कि आनन्द भीतर है। संसार मनुष्य को प्रतियोगिता सिखाता है, गुरु उसे प्रेम और संतुलन सिखाते है। संसार शरीर को सजाता है, गुरु आत्मा को संवारते है।

सद्गुरु शिष्य के कमजोर पहलूओं को न केवल मजबूत करते है बल्कि मजबूत पहलूओं को भी सही दिशा प्रदान करते है। **सद्गुरु शिष्य के विचारों को उचित दिशा और सकारात्मकता से परिपूर्ण करते हैं।**

विचार ही कर्म बनते हैं और कर्म ही भाग्य का निर्माण करते हैं। यदि विचार दूषित हों तो जीवन अशांत हो जाता है। सद्गुरु शिष्य को सकारात्मक, सात्त्विक और उच्च विचारों की ओर ले जाते है।

सद्गुरु द्वारा शिष्य को आत्मविश्वास

सद्गुरु शिष्य की आत्मिक शक्ति को जाग्रत करते है। सामान्यतः मनुष्य स्वयं को कमजोर समझता है, जबकि उसके भीतर असीम शक्ति छिपी होती है। सद्गुरु उस शक्ति का बोध कराते है। वह बताते है कि मनुष्य केवल शरीर नहीं, बल्कि चेतना है। जब यह अनुभूति जागती है तो जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाता है।

सद्गुरु शिष्य को बाधाओं, परेशानियों, संकटों से लड़ने की शक्ति देते है। जीवन है तो जीवन में दुःख, हानि, अपमान और संघर्ष आते ही रहते है। साधारण व्यक्ति टूट जाता है, किन्तु **सद्गुरु का शिष्य भीतर से इतना मजबूत होता है कि वह विपरित परिस्थितियों में भी सत्य, धैर्य और विवेक के साथ आगे बढ़ता हुआ सफलता को प्राप्त कर लेता है। सद्गुरु केवल सुख में साथ नहीं देते, सद्गुरु तो शिष्य के दुःख में आशा का दीप बन जाते है।**

सद्गुरु : निरन्तर मार्ग दर्शन

सद्गुरु शिष्य को धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, क्रोध-शांति, अधैर्य-धैर्य जैसे सूक्ष्म विषयों के मध्य श्रेष्ठता के साथ आगे बढ़ने का मार्ग बतलाते है। देश-काल, परिस्थिति के अनुसार **सद्गुरुदेव शिष्य को उचित-अनुचित मार्गों को चुनने की शक्ति प्रदान करते है। सद्गुरु केवल नियम-कायदे नहीं बताते है बल्कि जीवन में आत्म सम्मान का पाठ पढ़ाते है।**

इसी कारण आध्यात्मिक गुरु का महत्व शिक्षक गुरु और धर्मगुरु से अधिक माना गया है। शिक्षक व्यक्ति को संसार में सफल बनाता है, किन्तु आध्यात्मिक गुरु उसे स्वयं पर विजय प्राप्त करना सिखाता है। शिक्षक बुद्धि का विकास करता है, परन्तु आध्यात्मिक गुरु चेतना का विस्तार करता है। शिक्षक परीक्षा में उत्तीर्ण कराता है, परन्तु गुरु जीवन की परीक्षा में स्थिर रहना सिखाते है।

सद्गुरु शिष्य को केवल धार्मिक कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं रखते, बल्कि शिष्य को धर्म की आत्मा से साक्षात्कार कराते है, धर्म का मर्म समझाते है, धर्म के आचरण का ज्ञान प्रदान करते है, धर्म को जीवन का स्वरूप बनाने का ज्ञान प्रदान करते है। **सद्गुरु शिष्य को आत्मा की शुद्धि, आत्मा पर छाये दोष को शुद्ध करने वाली साधना सम्पन्न करवाते है।** इसी कारण कबीरदास जी ने कहा कि -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

गुरु - शिष्य : सृष्टि का श्रेष्ठ सम्बन्ध

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त आत्मीय और पवित्र होता है, मात्र औपचारिक सम्बन्ध नहीं होता। गुरु-शिष्य सम्बन्ध में विश्वास, श्रद्धा, समर्पण और प्रेम का आधार होता है। शिष्य गुरु के प्रति केवल सम्मान नहीं रखता, बल्कि गुरु के मार्गदर्शन में स्वयं को बदलने का प्रयास करता है। **सद्गुरु शिष्य को केवल साधक नहीं मानते, बल्कि अपने आत्मिक परिवार का अंग समझते है।**

श्रद्धावान लभ्यते ज्ञानम्

शिष्य का सबसे बड़ा गुण श्रद्धा है। श्रद्धा अंधविश्वास नहीं, बल्कि विश्वासपूर्वक ग्रहण करना है। जिस शिष्य में श्रद्धा नहीं होती, वह गुरु के ज्ञान को वास्तविक अनुभव नहीं कर पाता। जैसे बंद पात्र में जल नहीं भरा जा सकता, वैसे ही अहंकार से भरे व्यक्ति में ज्ञान नहीं ठहरता।

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।

शिष्य का धर्म

शिष्य को गुरु वचनों को जीवन में उतारना चाहिये। केवल चरण स्पर्श करने या पूजा करने से गुरु प्रसन्न नहीं होते। गुरु की वास्तविक पूजा उनके ज्ञान को व्यवहार में लाना है।

शिष्य को सेवा भाव रखना चाहिये। सेवा से अहंकार गलता है और विनम्रता आती है। **गुरु सेवा का उद्देश्य केवल सुविधा नहीं, बल्कि शिष्य के भीतर नम्रता और प्रेम का विकास करना होता है।**

शिष्य को सत्य और अनुशासन का पालन करना चाहिये। असंयमित और असत्य से भरा शिष्य गुरु ज्ञान का पात्र नहीं बन सकता। गुरु का ज्ञान केवल सुनने के लिये नहीं, बल्कि जीने के लिये होता है।

शिष्य को गुरु के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये। सामान्य मनुष्य थोड़ी सी सफलता मिलते ही अपने मूल को भूल जाते हैं। किन्तु सच्चा शिष्य सदैव स्मरण रखता है कि उसके जीवन में जो प्रकाश आया है, उसमें गुरु का योगदान है।

गुरु पूर्णिमा का पर्व इसी कृतज्ञता का उत्सव है। इस दिन शिष्य सद्गुरु के चरणों में प्रणाम कर, पूजन कर, यह स्वीकार करता है कि उसके जीवन में जो भी श्रेष्ठ है, वह गुरु की कृपा और मार्गदर्शन से सम्भव हुआ है। यह दिन केवल बाहरी उत्सव का नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी दिन है। शिष्य को इस दिन पूरे परिवार सहित गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु ज्ञान को आत्मसात् करने का वचन लेना चाहिये।

गुरु पूर्णिमा 'गुरु' के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करने का पर्व है। गुरु पूजन के माध्यम से शिष्य अपने अहंकार का त्याग कर अपना सर्वस्व गुरु चरणों में अर्पित कर देता है।